हि.प्र. विभागीय परीक्षा बोर्ड

विभागीय परीक्षा सत्र दिसम्बर–2018

पेपर 2 + 4

हिन्दी (मौखिक)

समय–1 घण्टा

अंक–40

देवताओं के समान यक्ष, गंधर्व और किन्नर आदि जातियों का निवास स्थान स्वर्ग माना गया है। ये जातियां संगीत, नृत्य और सौंदर्य के लिए विख्यात रही हैं। अनेक इतिहासकार मानते हैं कि स्वर्ग और कहीं नहीं इसी हिमालय में है। और इसी के एक भाग में बसती थी किन्नर जाति। आज वही भाग हिमाचल प्रदेश का अंग है। सैलानी यहां नाचती–गाती स्त्री–पुरूषों की टोली देख सकते हैं। सुन सकते हैं भेड़ों के गले में बंधी घंटियों का स्वर और दूर से आती किसी युवक के ओठों पर थिरकती बंशी की मादक ध्वनि।

नक्शे पर देखिए, इस प्रदेश के उत्तर में कश्मीर है। दक्षिण में हरियाणा और उत्तर प्रदेश। पश्चिम में पंजाब और पूर्व में तिब्बत। इस प्रदेश का जो रूप आज दिखाई देता है वह इसे एक नवम्बर 1966 को प्राप्त हुआ है। वैसे इसका निर्माण 1948 में ही हो गया था। उस समय इसमें 30 पहाड़ी रियासतें शामिल हुई थीं। सन 1954 में बिलासपुर का राज्य इसमें मिला दिया गया। 1966 में जब पंजाब का फिर से बंटवारा हुआ तक उसके पहाड़ी जिले कांगड़ा, कुल्लू, लाहौल और स्पीति इसके हिस्से में आए। इस प्रदेश का लगभग 40 प्रतिशत भाग वनों से घिरा हुआ है। ये ही वन इसकी शोभा हैं। देवदार और चीड़ के सुंदर वृक्ष, नाना वर्णों के फूलों से आच्छादित पौधे, सुस्वादु फलों से लदे पेड़, आकाश को छूते हिमशिखर, कलकल नाद करते झरने और उसके आस–पास थिरकते–गुनगुनाते नर–नारी ये सब इस प्रदेश को अद्भुत सौंदर्य प्रदान करते हैं। 25 जनवरी, 1971 को यह भारत का 18वां राज्य बना।

इस प्रदेश के प्राचीन इतिहास के बारे में निश्चित रूप से कुछ पता नहीं। किंवदंति है वनवास के समय घूमते हुए पांडव इधर आए थे। उस समय यहां हिडिम्ब नाम का राक्षस रहता था। उसने पांडवों को खा जाने का निश्चय किया, लेकिन उसकी बहिन हिडिम्बा ऐसा नहीं चाहती थी। वह भीम से प्यार करने लगी थी। इसलिए उसने उन्हें सब कुछ बता दिया। तब भीम ने हिडिम्ब को मार डाला और उसके बाद मां की आज्ञा लेकर हिडिम्बा से विवाह कर लिया। घटोत्कच उन्हीं का पुत्र था। महाभारत के युद्ध में पांडवों की ओर से लड़ते हुए उसने कौरवों की नाक में दम कर दिया था। अंत में कर्ण को वह शक्ति निकालनी पड़ी जो उसने अर्जुन को मारने के लिए रखी हुई थी। आज भी यहां देवदारों से घिरे डूंगरी मंदिर में हिडिम्बा की पूजा होती है। उसके बिना कुल्लू में दशहरे का उत्सव ही आरम्भ नहीं होता।

मध्य युग में गोरखों के आक्रमण से पहलें कई शताब्दियों तक इस प्रदेश की छोटी–छोटी रियासतें आपस में लड़ती रही थीं। गोरखों के आक्रमण से यहां की सारी ऐतिहासिक सामग्री नष्ट हो गई। इसलिए अब इतिहास के नाम पर पौराणिक कहानियां और किंवदंतियां ही शेष रह गई हैं। लेकिन उन पर विश्वास नहीं किया जा सकता।

शिमला इस प्रदेश की राजधानी है। सन 1815 में यहां एक छोटा–सा गांव था। उसे जिरार्ड नाम के दो भाइयों ने ढूंढ़ निकाला था। पहले तो यहां यूरोपियन अफसरों के लिए सेनीटोरियम बनाया गया था, लेकिन बाद में अंग्रेजों को यह नगर इतना पसंद आया कि उन्होने उसे भारत की गर्मी के दिनों की राजधानी बना दिया। देवदार के वनो से घिरी हुई पर्वतमालाओं के बीच में यह नगर सचमुच इन्द्रपुर के समान दिखाई देता है। भारत के इतिहास में भी इस नगर का महत्वपूर्ण स्थान

है। सन 1903 में भारत, चीन और तिब्बत के प्रतिनिधियों की ऐतिहासिक बैठक इसी नगर में हुई थी। उसके बाद तो देश के भाग्य का निर्णय करने वाले न जाने कितने सम्मेलन इस नगर में हुए।

इस प्रदेश में जितने भी जिले हैं सबकी अपनी–अपनी विशेषताएं है। भारत की उत्तरी सीमा पर किन्नौर जिले में 'शिपकी' दर्रा है। चौदह हजार फुट ऊंचा यह दर्रा तिब्बत का द्वार कहलाता है। यहां सूखे फल और सब्जियों के अतिरिक्त और विशेष कुछ नहीं होता। अखरोट, बादाम, खुमानी, ओर अंगूर ये ही यहां की पैदावार है। लोग अधिकतर भेड़–बकरियां पालते हैं या ऊन कातकर पशमीने, पट्टू, गुदमें, पट्टियां, शाल आदि बनाते हैं। ये वस्तुएं संसार भर में पसंद की जाती है। अधिकतर कार्य यहां स्त्रियां ही करती हैं। पुरूष तो बस खेती का काम करते है।

यहां के लोग बहुत ही सरल स्वभाव के हैं। अपने अतिथियों का वे वैसा ही सत्कार करते हैं जैसे अपने प्रियजन का। स्त्रियां और पुरूष सभी मांस, चाय और तम्बाकू के प्रेमी हैं। ये लोग बौद्ध हैं। लेकिन हिन्दू रीति–रिवाज भी मानते हैं। भूमि कम होने तथा आर्थिक स्थिति के कारण बहु–पति प्रथा प्रचलित है। इस कारण अनेक विवाह योग्य युवतियां अपना सिर मुंडा कर 'जोमो' (भिक्षुणी) बन जाती हैं। जीवन भर समाज सेवा और धर्म प्रचार का काम ही वे करती हैं। इनके लिए बड़े–बड़े विहार बने हुए हैं। पुरूषों में जो 'लामा' बनते हैं, उन्हें बचपन में 7 या 10 वर्ष की अवस्था में ही दीक्षा लेनी पडती है।

पन्द्रह आषाढ़ को 'कानम विहार' के पुस्तकालय में एक बहुत बड़ा उत्सव मनाया जाता है। इस पुस्तकालय की वे 'ज्ञान–मंदिर' के रूप में पूजा करते हैं। माघ में कुलमो देवता और बुद्ध महामुनि की प्रसन्नता के लिए मेले लगते हैं। ये मेले ही इनके कठोर जीवन को सरस बनाते हैं। सात दिन तक एक ओर भगवान बुद्ध की पूजा होती है तो दूसरी ओर नाच–गान भी चलता रहता है। अपने–अपने देवताओं को ये कंधे पर उठा कर गाजे–बाजे के साथ जुलूस में लाते हैं। इनसे अपने भविष्य के सम्बंध में अनेक प्रश्न भी पूछते हैं।

स्त्रियां गहनों की शौकीन हैं। पांच–पांच, दस–दस सेर चांदी के गहने पहन कर ये नाच सकती हैं। सजना–सजाना इनको बहुत प्रिय है। चटकीले रंग इन्हें बहुत भाते हैं। हाथों में मेहंदी और ढेर सारी चूड़ियां पहनना ये सुहाग की निशानी मानती हैं। पुरूष चार कली वाला कोट, गर्म पाजामा और कांची पहनते हैं। कमर में कमरबंद बांधते हैं। चाय का बर्तन ओर चाबी का गुच्छा–ये दोनों इसमें बंधे रहते हैं।

विवाह की इनकी अपनी रीति है। इसी प्रकार मृत्यु संस्कार की भी। शव यात्रा में भी ये बाजे बजाते हैं। और शव को जलाने के अतिरिक्त नदी में भी बहा देते है। इसका निश्चय लामा करते है। इनके गांवों में जगह–जगह झंडियां लगी हुई नजर आती हैं। इन पर मंत्र लिखे रहते हैं। इनका विश्वास हे कि ये झंडियां उनकी भूत–प्रेतों और दैवी प्रकोपों से रक्षा करती हैं। लेकिन चीन के आक्रमण और नई सभ्यता के सम्पर्क में आने के बाद से इनके विचार बदल रहे हैं।

कांगड़ा–कुल्लू के मनोरम क्षेत्र देवदार के सघन वनों से घिरे हुए हैं। इस घाटी के हर गांव का अपना एक देवता होता है। ये लोग मानते हैं कि कलियुग में सभी देवता यहां आकर रहने लगे है। इसीलिए कुल्लू घाटी देवताओं की घाटी कहलाती है।

हिमालय से निकलने वाली अनेक नदियां इस प्रदेश को उपजाऊ बनाती हैं। सतलुज, व्यास, रावी, चिनाव, टौंस, पार्वती, बांढ़गंगा और सरवरी उनमें प्रमुख हैं। इनमे से अनेक नहरें निकाली गई

हैं। गेहूं, मक्का, धान, बाजरा, कांदा, तम्बाकू, चाय और आलू आदि की उपज होती है। फलों का तो यह प्रदेश ही है। यहां के सेब और नाशपाती सारे देश में प्रसिद्ध हैं। इनके अतिरिक्ति अनार, अखरोट, दाख, आड़ू, चेरी, रसभरी, खुमानी, चेस्नट और जापानी फल आदि अनेक प्रकार के फल यहां पैदा होते हैं। नाना प्रकार के फूल यहां इतने होते हैं कि यह क्षेत्र बगीचे के समान लगता है। यहां के शाल बहुत प्रसिद्ध हैं। इसके अलावा पशमीना, पट्टू, कम्बल आदि वस्त्र भी सुंदर बनते हैं। रंगीन टोपियां तो यहां की विशेषता हैं।

कहते हैं महाभारत काल में यहां राजा सुश्रम राज्य करते थे। उन्हीं के वंश में 18वीं शताब्दी में राजा संसार चन्द्र हुए। सतलुज, व्यास और चिनाव नदियों के बीच में होने के कारण इस प्रदेश का नाम त्रिगर्त था। बौद्ध युग में यह प्रदेश बहुत उन्नत था। चीनी यात्री हेनसांग ने इसकी चर्चा की है। इस प्रदेश में नाना जाति के लोग बसते हैं। भाषाएं भी बहुत–सी बोली जाती हैं। हिन्दी और पहाड़ी उनमें प्रमुख हैं। ये लोग बड़े सरल और सहिष्णु होते हैं। स्त्रियां अधिक परिश्रमी होती हैं।

प्रसिद्ध स्थानों में पालमपुर अपने चाय बागान के लिए दर्शनीय है। ज्वालामुखी का दुर्गा–मंदिर इसी क्षेत्र में है। कांगड़ा बड़ा प्राचीन नगर है। मंदिरों की सम्पत्ति से आकर्षित होकर मोहम्मद गजनवी, फिरोज तुगलक और तैमूर ने इस प्रदेश पर आक्रमण करके इसे खूब लूटा था। यहां का किला देखने लायक है। बैजनाथ में भी बारह सौ वर्ष पुराने मंदिर हैं।

कुल्लू अपने सुस्वादु सेवों के लिए तो प्रसिद्ध है ही, यहां का दशहरे का मेला देखने के लिए भी सारे देश के लोग आते हैं। उत्तर भारत के दशहरे से यह भिन्न है। रघुनाथजी की मुर्ति को रथ में सजाते हैं। फिर उस रथ को महाराज सहित बड़े–बड़े लोग खींचते हैं। गांव–गांव से अपने–अपने देवता लेकर झूमते आते पुरूष, रंग–बिरंगे वस्त्र और आभूषण पहने नाचती–गाती वातावरण को मस्त बना देती हैं।

नृत्य–संगीत के अतिरिक्त व्यापार भी इस मेले में खूब होता है। दूर–दूर के स्थानों से व्यापारी आते हैं। नमक, चमड़ा, फल, पट्टू, पशमीना, शाल, कम्बल, शिलाजीत, कस्तूरी, घोड़े, खच्चर सभी कुछ का व्यापार होता है। यहीं पर एक शिखर पर बिजली महादेव मंदिर है। कहते हैं, वर्ष में एक बार इस पर अवश्य ही बिजली गिरती है और शिवलिंग को तोड़ देती है। उन टुकड़ों को उठाकर पुजारी फिर सत्तू और मक्खन से जोड़ देता है।

*****